स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

किसने की एड्स वायरस की खोज

रॉबर्ट गैलो

1986 में रॉबर्ट गैलो को लास्कर पुरस्कार दिया गया। गैलो उस समय बाल्टीमोर स्थित मैरीलैण्ड विश्वविद्यालय चिकित्सा शाला में मानव वायरस विज्ञान के निदेशक थे। यह पुरस्कार उन्हें एड्स के कारक के रूप में एक रिट्रोवायरस की पहचान के लिए दिया गया था।

मगर अचरज की बात यह रही कि जब 2008 में इसी खोज के लिए चिकित्सा/कार्यिकी के नोबेल पुरस्कार की घोषणा हुई तो एड्स के लिए ज़िम्मेदार वायरस की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार फ्रांस के पाश्चर संस्थान के लक मॉन्टेनियर और फ्रांस्वा बारेसिनोसी को मिला। यानी नोबेल समिति ने एचआईवी की खोज का श्रेय गैलो को नहीं बल्कि मॉन्टेनियर और बारेसिनोसी को दिया। और इन वैज्ञानिक द्वय का शोध पत्र 1983 में साइन्स पत्रिका प्रकाशित हो चुका था और इस शोध पत्र में उन्होंने इस वायरस को एलएवी नाम दिया था। तो माजरा क्या है?

फ्रांस्वा बारेसिनोसी

हुआ यों था कि गैलो ने 1984 में साइन्स में दावा किया था कि उन्होंने एक वायरस एटीएलवी-III की खोज एड्स के कारक के रूप में की है। इस शोध पत्र को लेकर विवाद पैदा हो गया था। इसी विवाद के चलते नोबेल समिति ने गैलो का नाम शामिल नहीं किया था। इस मामले की जांच ऑफिस ऑफ रिसर्च इंटेग्रिटी (शोध में इमानदारी कार्यालय) ने की थी और 1992 में अपनी रिपोर्ट में बताया था कि गैलो ने जानबूझकर अपने शोध पत्र के अलावा पेटेंट सम्बंधी आवेदन में भी गुमराह करने की कोशिश की थी। दरअसल, गैलो ने जिस वायरस को कोशिकाओं पर पनपाया था, उसका नमूना उन्हें मॉन्टेनियर से ही प्राप्त हुआ था। इस काम के लिए जिन कोशिकाओं का उपयोग किया गया था, वे भी गैलो की प्रयोगशाला में तैयार नहीं की गई थीं बल्कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान की एक प्रयोगशाला में कार्यरत डॉ. एडी गज़दर से प्राप्त हुई थीं।

लक मॉन्टेनियर

कुल मिलाकर स्पष्ट था कि रॉबर्ट गैलो ने एड्स वायरस की खोज का श्रेय लेने के लिए अपने प्रकाशनों में गलतबयानी की थी।

प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द सरदाना की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी